'जिया ले गयो जी मोरा सांवरिया'

'मदन मोहन का संगीत कानों में रस घोलने के साथ-साथ आत्मा को भी तृप्त करता है। इसीलिए उनके दो गीतों पर नौशाद जैसे संगीतकार अपनी तमाम रचनाएं कुर्बान करने को तैयार थे।'

इंदौर। सुरों के जादूगर मदन मोहन की स्मृति में संस्था 'स्वरदा' द्वारा उनके सुरीले गीतों की महफिल रविवार शाम जाल सभागार में सजाई गई। 'सुरमई शाम का मयूर स्पर्श-मदन मोहन' प्रोग्राम में उनके संगीतबद्ध लता, आशा, रफी, तलत के गाए मेलोडियस गीत पेश किए गए।

खड़े-खड़े सुना पूरा प्रोग्राम

हॉल खचाखच भर गया था। बाहर लगाई गई कुर्सियों पर भी लोग जम गए थे। मजबूरन सैकड़ों लोगों को खड़े-खड़े ही प्रोग्राम सुनना पड़ रहा था। दरअसल सपना केकरे-शिफा अंसारी के कंठ से सुरों की ऐसी गंगा-जमना प्रवाहित हो रही थीं कि हर श्रोता उसमें डूब जाना चाहता था। गोल्डन म्यूजिकल ईरा को जीवंत करते हुए दोनों गायिकाओं ने मदन मोहन के बेमिसाल गीतों की खूबसूरत मेडली से शुरुआत की। दोनों श्रोताओं को रूहानी सुकूं अता करने में कामयाब रहीं।

'है तेरे साथ मेरी वफा'

इसके बाद सपना ने 'जिया ले गयो रे मोरा सांवरिया, है तेरे साथ मेरी वफा' रस्मे उल्फत को निभाएं तो निभाएं कैसे (हंसते जख्म), मैं तो तुम संग प्रीत लगा के हार गई सजना (मनमौजी), कदर जाने ना मोरा बालम बेदर्दी (भाई-भाई), बैरन नींद न आए (चाचा जिंदाबाद) और तू प्यार करे या ठुकराए हम तो हैं तेरे दीवानों में (देख कबीरा रोया) जैसे दिल छू लेने वाले सुमधुर गीत पेश किए।

वो चुप रहें तो...

शिफा अंसारी ने भी 'बैया ना धरो, न तुम बेवफा हो न हम बेवफा हैं, इक बात पूछती हूं, जरा सी आहट होती है तो दिल सोचता है' जैसे गीतों के जरिए बारिश के मौसम में सुरीली झड़ी लगाकर माहौल खुशगवार बना दिया। राजेंद्र गलगले ने भी गानों के साथ इंसाफ करने की हरमुमकिन कोशिश की। चेतन घोड़ेश्वर (कीबोर्ड), विक्रमजीत सिंह (ऑक्टोपेड), रवि खेड़े (ढोलक, कांगो), सचिन परमार व विकास जैन (गिटार), परेश राजपूत (साइड रिद्म), अमोल करखानिस (तबला) ने अपने फर्ज को बखूबी अंजाम दिया।